पूर्व राज्यपाल श्री हरिविनायक पाटस्कर का भाषण

आज जब हम यहां पुनः मिल रहे है इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे मस्तिष्क में सबसे प्रथम विचार उस दुखद क्षति के संबंध में बह रहें है जो कि मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के निधन से पूरे राष्ट्र को हुई है। हमारे स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के वे मुख्य नायकों में से थे तथा स्वतंत्र भारत के निर्माताओं में उनका प्रमुख स्थान था। जहां एक तरफ उनमें अद्‌वितीय साहस तथा ज्वलन्त देशभक्ति थी, दूसरी तरफ उतनी ही गंभीर विद्‌घता, उच्च संस्कृति व्यापक सहिष्णुता तथा मानव प्रेम के उद्‌दात गुण भी उनमें भरे पूरे थे। स्वाधीनता के लम्बे संघर्ष के दिनों में तथा स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हमारी समस्याओं को सुलझाने में हमें उनकी एक ऐसा मेधा शक्ति का लाभ मिलता था, जो हमारे देश की सर्वात्तम परम्पराओं से ओत-प्रोत थीं। इस प्रकार उन्होंने संगठन, शक्ति तथा भाईचारे के एक उच्चादर्श के प्रतीक-स्वरूप सेवा की। हम उनकी स्मृति में इससे अच्छी श्रद्‌घांजलि अर्पित नहीं कर सकते कि हम अपने हृदय में, उनके द्‌वारा प्रस्तुत आदर्शों तथा परम्पराओं को जीवित रखें। मैं प्रार्थना करता हूं कि यह आदर्श एवं परम्परायें आने वाले वर्षों में हमारे पथ को अवलोकित करें।